**आर्जवम्**

**आर्जवम् का अर्थ है जीवन में सरलता और शरीर, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण में किसी प्रकार की अकड़ या अहंकार न होना. इस प्रकार हमारा व्यवहार सरल होना चाहिए बिना किसी मिथ्याचार के.**

यह दैवी गुण हमें अपने व्यवहार पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करता है, हम जिस से भी मेलजोल रखें वह एक साधारण पुरुष की तरह ही रखें बिना किसी बनावटीपन के. हमें यह ध्यान रखना हे की हमारे मन में किसी तरह का स्वार्थ न हो. **हम जो सोचें, वही बोलें और वही करें**.

बनावटीपन अथवा मिथ्याचार हमें मनुष्य से पशु बना देता है. हम अपने आप को सबसे बहेतर दिखाने के लिए बहुत नीचे गिर जाते हैं, सबसे घृह्णा करने लगते हैं, राग द्वेष करने लगते हैं और हिंसा पे उतारू हो जाते हैं. यह सब लक्षण हमें एक पशु जैसा बना देते हैं क्यूंकि हम अपना व्यवहार दिखावटी रखना चाहते हैं, अगर हम उसे सरल बनायें और हमेशा जैसे हैं वैसे ही रहें तो हम हमेशा भगवन के समीप रहेंगे.

इसलिए सबसे पहले हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए, सोच से ही व्यवहार बनता हैं. सरल व्यवहार रखने के लिए सरल सोच रखनी पड़ेगी.

**Saint Kabir ji has said:**

***साँच बराबर तप नहीं, झूट बराबर पाप, जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप***

*There is no austerity like truth (****behaving truthfully, speaking truth*** *and true knowledge of truth) in this world and there is no sin like falsehood. One, who has truth in his heart, has the embodiment of truth (God) in his light of true knowledge in the heart.*

***दीन गरीबी दीन को, दुंदुर को अभिमान, दुंदुर तो विष से भरा, दीन गरीबी जान***

*A simple and gentle person likes simplicity, humility and humbleness, whereas a wicked person likes to be self-important in his/her behavior. Thus, a wicked person is full of the poison of ego and a humble person finds it suitable to be simple in his life.*